विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – अष्टम **दिनांक -04- 01 - 2022**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक - पंकज कुमार**

सुप्रभात् बच्चों आज सदामा चरित के बारे में अध्ययन करेंगे।

वैसई राज-समाज बने, गज-बाजि घने मन संभ्रम छायौ।

वैसई कंचन के सब धाम हैं, द्वारिकै माहि मनौं फिरि आयो॥

भौन बिलोकिबे को मन लोचब, सोचत ही सब गाँव मंझायो।

पूछत पाँडे फिरे सब सों, पर झोपरी को कहुँ खोज न पायौ॥

सुदामा जब श्रीकृष्ण से मिलकर अपने नगर लौटे तो देखा, राजमहलों और हाथी-
घोड़ों का जैसा समूह द्वारिका में था वैसा ही इस नगर में भी है। अतः उनके मन में यह भ्रम हो गया कि कहीं रास्ता भूल कर वे फिर द्वारिका तो नहीं चले आए? अपना घर देखने के लिए उनका मन ललच रहा था। मन में तर्क-
वितर्क करते हुए उन्होंने सारा गाँव छान डाला। सबसे पूछताछ भी की; पर उन्हें अपनी झोंपड़ी का कहीं पता न लगा।

टूटी-सी छानी हती, कहूँ कंचन के सब धाम सुहावत।

कै पग मैं पनही न हती, कहँ लें गजराजहु ठाढ़े महावत॥

भूमि कठौर पै रात कटे, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत।

कै जुरतो नहीं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तें दाख न भावत॥

(कवि सुदामाजी की विगत एवं वर्तमान दशा की तुलना करते हुए कहता है—) द्वारिका जाने के पूर्व उनकी टूटी-फूटी झोपड़ी थी, आज उनके सोने के महल हैं। पहले (निर्धन होने के कारण) कहाँ वे नंगे पैर रहते थे, आज उनकी सवारी के लिए गजराज स जे हुए हैं। पहले कहाँ कठोर पृथ्वी पर बिना बिछावन के ही वे रात काट लेते थे, आज कोमल सेज पर भी उन्हें नींद नहीं आती। पहले कहाँ उ न्हें कोदों-साँवाँ-जैसे मोटे अनाज भी भरपेट नहीं मिलते थे, आज भगवान की कृपा से उन्हें इतना धन मिल गया कि दाख-जैसे मेवे भी अच्छे नहीं लगते।